5. पठार का एक गांव - बालमपुर

पठार का नज़ारा

तुमने मैदान और पहाड़ों की दुनिया की कुछ झलक देखी। क्या दोनों में कुछ अंतर लगा? आओ अब भोपाल के पठार की तरफ चलें।

पृष्ठ 176 के चित्र में तुम भोपाल का पठार देखो। क्या यह नर्मदा के मैदान से ऊंचा है? क्या यह सतपुड़ा पर्वत जितना ऊंचा है?

अगर हम पठार के ऊपर चारों ओर घूमें तो यह नहीं लगेगा कि हम ऊंचाई पर पहुंच गए हैं। असल में पठार के ऊपर का इलाका हल्का ऊंचा नीचा समतल सा होता है। उस पर सतपुड़ा के पहाड़ जैसी ढलानें नहीं होतीं।

हम भोपाल से विदिशा की तरफ चले। उत्तर की तरफ लगभग 20 किलोमीटर चलने के बाद भोंपाल के पठार की समतल सतह अचानक खत्म हो गई। हमें घुमावदार रास्ते से नीचे उतरना पड़ा। हम किसी पहाड़ पर तो चढ़े नहीं थे, फिर यह ढलान किसकी थी? दरअसल हम भोपाल के पठार की **कगार** (यानी किनारे) से नीचे उतर रहे थे। कगार से नीचे उतर कर हम विदिशा के पठार पर पहुंच गए।

चित्र 1 में देखो, दूर से पठार कैसा दिखता है। भोपाल के पठार के नीचे दूर तक समतल विदिशा का पठार भी दिख रहा है। भोपाल के पठार का किनारा बिलकुल सीधा दीवार की तरह खड़ा है।

इस चित्र में किस अक्षर से क्या दिखाया गया है–

भोपाल का पठार - विदिशा का पठार -

भोपाल के पठार की कगार -

चित्र 1. भोपाल-विदिशा का पठार

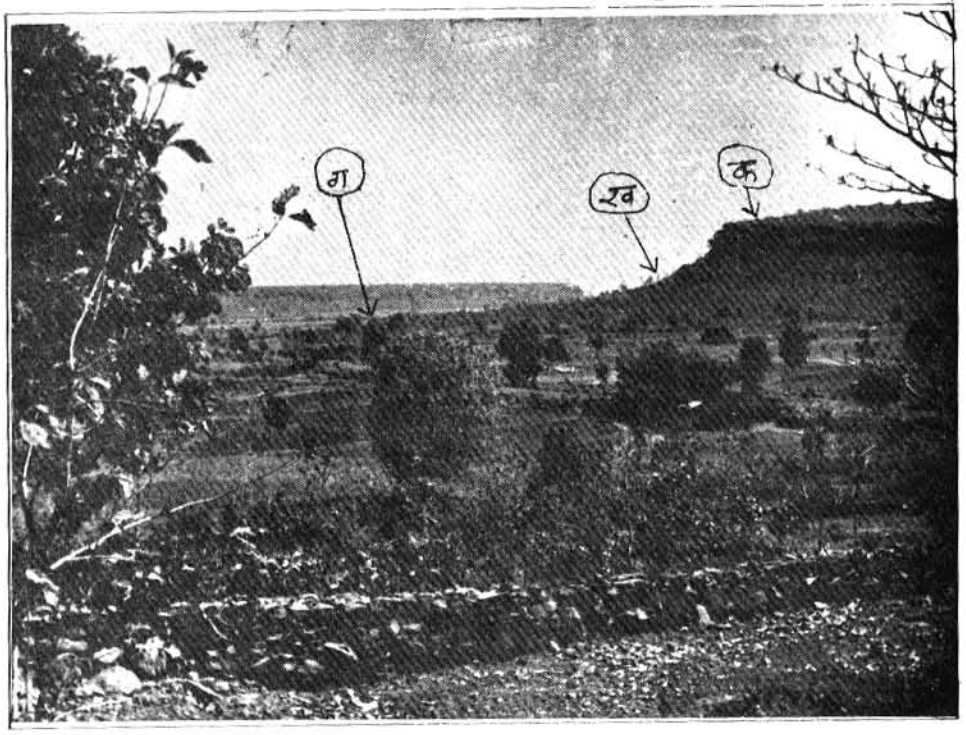

पठार की बनावट

तुमने नर्मदा के समतल मैदान पर दूर-दूर तक खेतों की बात पढ़ी थी। भोपाल का पठार पूरी तरह समतल तो नहीं है पर हल्का ऊंचा-नीचा ही है। क्या यहां भी मैदान की तरह खूब खेतिहर भूमि है?

पथरीले और समतल हिस्से

पठार के बहुत से हिस्से समतल हैं और वहां खेती लायक अच्छी मिट्टी है। लेकिन पठार के कई हिस्से **ढलवां** हैं जहां मिट्टी की परत कम गहरी है। इन हिस्सों में खेती अच्छी नहीं होती है।

पठारों में आम तौर पर मिट्टी की परत के नीचे चट्टान होती है। ढलवां ज़मीन, जहां मिट्टी की परत हल्की है, और नदियों के पाट में चट्टान की यह सतह दिखती है।

क्या मैदानी नदी नालों के पास की ज़मीन भी पथरीली होती है?

कगार के पास की ज़मीन भी पथरीली व ऊंची-नीची है। उस पर बलुई और कंकरीली मिट्टी की पतली परत ही मिलती है। ऐसी ज़मीन हमें पाहवाड़ी में भी दिखी थी। भला बताओ ऐसी ज़मीन पर कोई खेती करे तो क्या उगेगा!

चित्र 2 कगार से टूटी चट्टानें, पत्थर और कंकड़

पठार के ऐसे पथरीले हिस्से दूर से ही अलग नज़र आ जाते हैं। वहां काफी जंगल, झाड़ियां व घास दिखाई देती है। भोपाल के पठार के जंगल कुछ कट गए हैं। फिर भी कुछ बाकी बचे हैं।

पठार पर ढलवां इलाकों और कगार से हटकर जो सपाट समतल ज़मीन के हिस्से हैं वहां काली चिकनी मिट्टी है। महीन कणों की यह काली मिट्टी पानी के साथ दूर तक बह आती है और समतल ज़मीन पर बिछ जाती है। वैसे मिट्टी के नीचे भी काली चट्टान है जिसके टूटने से भी काली चिकनी मिट्टी बनती है। यह मिट्टी बहुत उपजाऊ है। अगर सिंचाई का पानी मिले तो इसमें साल में दो फसलें हो सकती हैं।

चित्र 1 में कौन से अक्षर -

पठार का समतल इलाका दिखाते हैं -

पठार का ढलवा हिस्सा दिखाते हैं -

चित्र 1 में कहां कैसी मिट्टी होगी - सही विकल्प चुनो। (पथरीली / काली / नहीं)

'क' पर मिट्टी ———— होगी।

'ख' पर मिट्टी ———— होगी।

'ग' पर मिट्टी ———— होगी।

पठार के बारे में अब तक बताई गई कौन सी तीन बातें मैदान की बातों से फर्क लग रही हैं?

मैदान, पहाड़ और पठार --- इन तीनों में से समतल ज़मीन ज़्यादा कहां होगी?

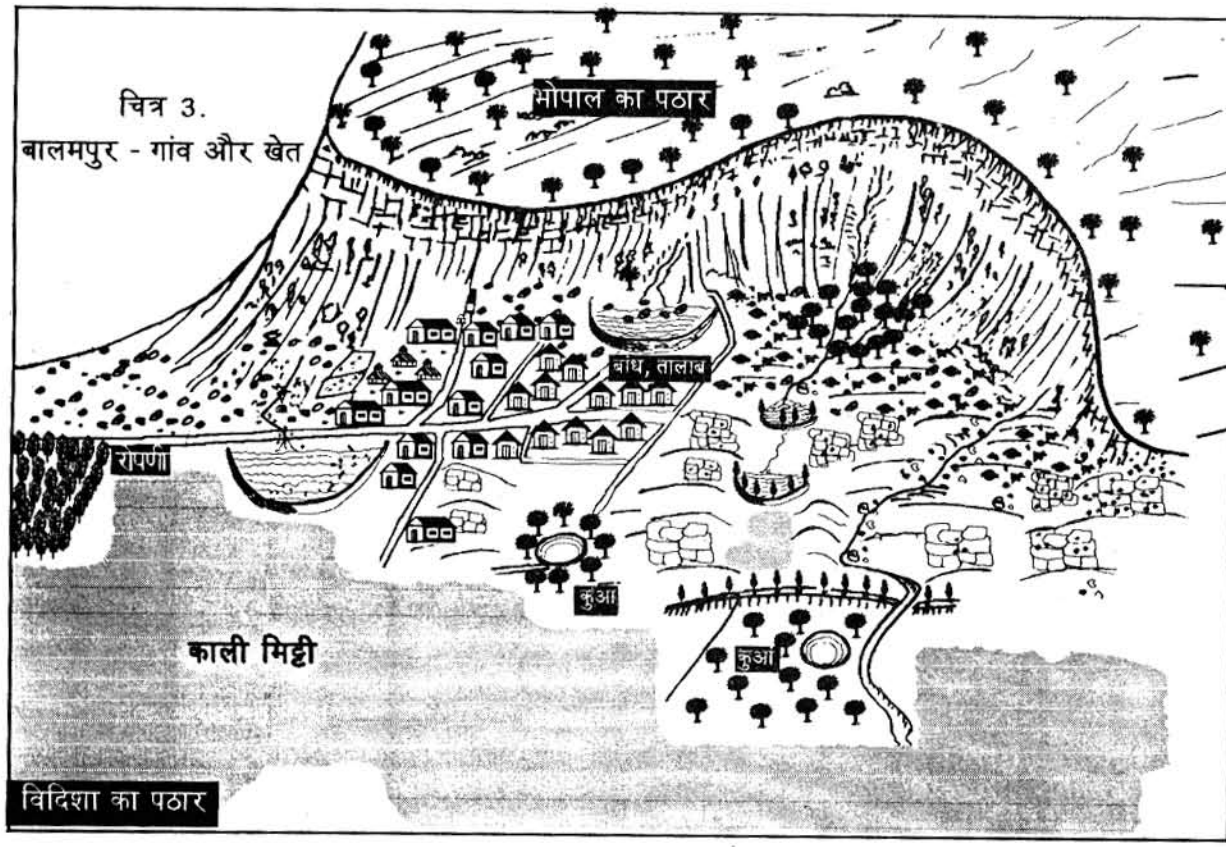

चित्र 3.
बालमपुर - गांव और खेत

कगार के तले एक गांव बालमपुर

बालमपुर की धरती

भोपाल के पठार की कगार के ठीक नीचे एक गांव बसा है - बालमपुर। विदिशा की सड़क छोड़कर हम कच्ची सड़क से होते हुए बालमुपर पहुंच सकते हैं। यह गांव कगार की जड़ में बसा है। चित्र 2 में देखो गांव के ऊपर कगार की बड़ी-बड़ी चट्टानें, टूटे पत्थर, कंकड़, बालू सब दिख रहे हैं।

कगार से उतरने वाले नदी नाले बरसात में खूब पानी लाते हैं और उनके साथ ही कंकड़, बालू, आदि आकर ढलान के पास के खेत पर बिछते जाते हैं।

बताओ इनके बिछने से खेत की मिट्टी बेहतर होगी या खराब होगी?

क्या मैदान में भी नदी-नालों के साथ खेतों में कंकड़-पत्थर बिछते हैं?

कगार से कुछ दूर बालमपुर गांव के समतल हिस्सों में काली चिकनी मिट्टी की ज़मीन भी है।

अब चलो देखें कि पठार के इस गांव में लोग खेती बाड़ी कैसे करते हैं।

तालाब और बांध

ऊपर बालमपुर गांव का एक चित्र देखो। चित्र में सड़क, घर, कुएं, तालाब व बांध पहचानो। कगार से उतरते हुए कुछ नाले भी दिख रहे हैं। नालों के सामने बंधान बनाए गए हैं। बंधान के एक तरफ नाले का पानी जमा होकर भर जाता है और इस तरह तालाब बन जाता है।

चित्र 3 में कितने तालाब व बांध दिख रहे हैं? कोटगांव की समतल भूमि पर ऐसे तालाब नहीं

...गए थे। बालमपुर की तुलना में कोटगांव में तालाब बनाना मुश्किल क्यों है? सोचकर बताओ।

इन तालाबों का एक फायदा तो यह है कि इनमें बरसात का पानी इकट्ठा किया जा सकता है और सिंचाई के लिए उपयोग किया जा सकता है। इनका एक और फायदा है। ये मिट्टी को कटने से रोकते हैं और खेतों पर कंकड़-पत्थर बिछने से भी रोकते हैं। यह कैसे - चलो देखें।

नदी नालों के साथ कगार के कंकड़, बालू और पत्थर नीचे आ कर खेतों में बिछ जाते हैं – यह तुम जानते हो। बालमपुर में तेज़ी से बहते नालों ... कगार के पास के खेतों की मिट्टी के बह ... का भी डर रहता है।

...नों के कारण कंकड़-बालू तालाब में ही रोक लिए जाते हैं और खेत की मिट्टी बहने से बच जाती है।

बालमपुर के एक किसान ने अपनी भूमि पर ही छोटा बांध बनाकर तालाब बना लिया है। बांध बनाने से उसके खेत में बरसात का पानी रुका रहता है और मिट्टी को पानी सोखने का समय मिल जाता है। कंकड़ पत्थर भी रुक जाते हैं और उसके सब खेतों पर नहीं बिखरते। मिट्टी का कटाव भी रुक जाता है। इस किसान के खेत के बांध को चित्र 3 में देखो। इस तरह किसानों ने प्राकृतिक बनावट और पानी का उपयोग कितनी समझदारी से किया है!

सही विकल्प चुनकर खाली स्थान भरो

कगार के पास की ज़मीन पर नाले ——— बिछाते हैं और ——— बहा कर ले जाते हैं। (मिट्टी, कंकड़-पत्थर)

तालाब कगार के ——— बनाए गए हैं। (ऊपर, नीचे, बीच में)

तालाब बनाने के लिए ——— गए हैं/गई है। (बंधान बनाए/ज़मीन खोदी)

बंधान से रोके गए पानी के कारण ——— में नमी रहती है; ——— के लिए पानी मिलता है; ——— खेतों में नहीं बिछते। (सिंचाई, मिट्टी, कंकड़-पत्थर)

चित्र 3 में जहां ढलवां व पथरीले खेत होंगे वहां 'प' लिखो। जहां चिकनी मिट्टी बिछी होगी वहां 'च' लिखो।

कुएं

अभी ऊपर तुमने देखा कि ढलवां भूमि पर बांध बनाकर आसपास की भूमि पर सिंचाई हो सकती है। लेकिन इससे पूरे गांव की भूमि तो नहीं सींची जा सकती है।

बालमपुर के किसानों ने खेतों की सिंचाई के लिए कुएं बनाये हैं। पीने के पानी के कई कुएं गांव में पहले भी थे लेकिन सिंचाई के लिये कुएं तो अभी कुछ सालों से बनाए जाने लगे हैं।

यहां मिट्टी की परत के नीचे कठोर चट्टान है। उसे बारूद से तोड़ना पड़ता है। फिर भी चट्टान तोड़ने पर हर जगह पानी नहीं मिलता है। यहां की चट्टानों में दरारें हैं जिनमें भू-जल भरा रहता है।

चट्टानों में जो दरार रहती हैं, अक्सर उनमें **भू-जल** भरा रहता है। ऐसी कोई दरार जब कुएं की दीवार या तलहटी में मिल जाती है तभी पानी की धारा फूट निकलती है। अगर नहीं निकली तो सिंचाई के लिए काफी पानी नहीं मिलता। किसी

तरह यह दरार मिल जाए और कुएं में पर्याप्त पानी आए, इसके लिए कुआं काफी बड़े दायरे का बनाया जाता है। पानी मिलता है तो 30-40 फीट की गहराई पर मिलता है। इतना गहरा कुआं चट्टान में खोदना बहुत मुश्किल और महंगा काम है।

बालमपुर के किसान बताते हैं कि अभी केवल 4-5 कुओं से सिंचाई होती है। एक कुएं से 4-6 एकड़ की ही सिंचाई हो पाती है। नर्मदा के मैदान में बसे गांवों को वहां की धरती ने इतना पानी दिया है कि वे खूब सिंचाई कर सकते हैं। जबकि पठारी गांवों में यह सुविधा कुछ ही खेतों को मिलती है।

पठार पर सिंचाई का एक और तरीका है – नलकूप। लेकिन अभी बालमपुर में यह साधन विकसित नहीं है।

बालमपुर में सिंचाई की क्या कठिनाइयां हैं, सही विकल्प चुनो–

1. यहां बारिश नहीं होती। 2. यहां बांध व तालाब नहीं बन सकते। 3. यहां कुआं बनाना मुश्किल है। 4. यहां नलकूप नहीं बन सकते। 5.यहां के लोगों के पास पैसे नहीं हैं।

पाहवाड़ी और बालमपुर की सिंचाई की कठिनाइयों में क्या समानता दिखती है?

खेती

तुमने ऊपर पढ़ा था कि बालमपुर में मिट्टी कहीं अच्छी है और कहीं पथरीली है। तुमने यह भी देखा कि वहां सिंचाई कम होती है। आओ अब देखें कि वहां ऐसे में खेती कैसे होती है।

तुम अपने अंदाज़ से बताओ कि बालमपुर में पाहवाड़ी से अच्छी खेती होगी कि नहीं।

रबी की फसलें

भोपाल-विदिशा के पठार में रबी की ही मुख्य फसल है। बालमपुर में भी अधिकांश ज़मीन परे जाड़े में ही फसल ली जाती है। रबी में यहां चना और मसूर जैसी दालें और गेहूं बोया जाता है।

यहां सिंचाई कम होती है, इसलिए बरसात के बाद मिट्टी में जो नमी रह जाती है उसी के भरोसे ये फसलें उगायी जाती हैं।

किसान ज़्यादा सिंचाई तो नहीं कर पाते पर मिट्टी को उपजाऊ बनाए रखने की कोशिश करते हैं। वे हर साल एक खेत में एक सी फसल नहीं बोते हैं। चना और गेहूं बदल-बदल कर बोते हैं। बता सकते हो ऐसा क्यों है? एक ही फसल बोते रहें तो मिट्टी की उर्वरा शक्ति कम हो जाती है। चना व दालें बोने से जड़ों के पास **उर्वर पदार्थ** इकट्ठा होता है और उससे मिट्टी अच्छी होती है।

खरीफ की फसलें

पानी तो बालमपुर में भी काफी बरसता है। फिर भी किसान खरीफ (बारिश) की फसल नहीं लेते। ऐसा क्यों है? किसानों ने बताया कि चिकनी काली मिट्टी में पानी खूब ठहरता है। बरसात में मक्का, ज्वार आदि बोएं तो उनकी जड़ें सड़ जाती हैं और पैदावार अच्छी नहीं होती। इसलिए जहां बलुई और ढलवां जमीन है, वहीं खरीफ में मक्का और ज्वार बोई जाती है।

खरीफ की फसल कम लेने का एक और कारण भी है। बालमपुर के किसान बरसात में अगर फसल बो दें तो उनके खेतों की नमी खत्म हो जाएगी और रबी में गेहूं चना उगाने के लिए मिट्टी में नमी नहीं रहेगी।

कुछ किसान जिनके पास सिंचाई के साधन हैं, खरीफ की फसल ऐसी भूमि में बोते हैं जहां सिंचाई की सुविधा हो। सोयाबीन तथा ज्वार खरीफ की फसलें हैं। ये किसान खरीफ की फसलें काटकर फिर खेत को खूब अच्छी तरह सींचते हैं तब जोतकर गेहूं और चना बोते हैं। अगर सिंचाई के साधन हों तो बालमुपर के किसान उपज बढ़ा सकते हैं और दो फसलें पैदा कर सकते हैं।

सही विकल्प चुनो –

बालमपुर में ज़्यादातर फसलें कब ली जाती हैं- (गर्मी में/सर्दी में/बरसात में)

बालमपुर की फसलें कैसे ली जाती हैं - (सिंचाई से/बरसात के पानी से/मिट्टी की नमी की मदद से)

बालमपुर के खेतों में मिट्टी कैसी है - (काली व चिकनी/रेतीली/दोमट)

काली मिट्टी में पानी- (ठहरता है / नहीं ठहरता है)

चित्र 4 बालमपुर में जंगल की रोपणी

रिक्त स्थान भरो -

चिकनी मिट्टी में बरसात की —— व —— फसलें नहीं बोई जातीं क्योंकि ———— ।

बरसात की फसल उसी ज़मीन पर बोते हैं जिसमें ———— हो ताकि बरसात की फसल काटने के बाद रबी में गेंहू-चना ———— जा सके।

पशुपालन

कोटगांव की तरह बालमपुर में भी चारे की कमी हो जाती है। पास के जंगल में **वृक्षारोपण** हो रहा है, इसलिए वहां जानवर चरने नहीं जा सकते। खेती से निकला भूसा आदि ही चारे के लिए मिलता है, जो पूरा नहीं पड़ता। अधिकतर किसान खेती के काम और घर में दूध की ज़रूरत पूरी करने के लिए ही जानवर पालते हैं।

जंगल कटे - जंगल लगे

जब खेती-बाड़ी में कठिनाइयां हों तो लोगों के लिए दूसरे काम धंधों का बहुत महत्व हो जाता है। पठार की पथरीली ज़मीन पर खेती नहीं की जा सकती पर उस पर उगे जंगल से लोगों को फायदा मिल सकता है।

बालमपुर के पुराने रहने वाले बुजुर्ग लोग बताते हैं कि गांव के ऊपर पठार की भूमि, कगार तथा उसके नीचे की भूमि लगभग 25 साल पहले तक घने वनों से ढकी थी और बीच-बीच में ऊंची घास भी उगती थी। यहां सांभर, चीतल, रीछ, तेंदुए, शेर आदि मिलते थे। भोपाल के लोग यहां शिकार के लिए आते थे। गांव के लोग भी जानवरों को मार लेते थे। वे जंगल में मिलने वाली और चीज़ों को

इकट्ठा करके बेचा करते थे।

धीरे-धीरे जंगल कटते गए। अब ज़्यादातर जंगल कट गया है, और अब लोग उनमें बस कुछ तेंदूपत्ता तोड़ते हैं व डलिया बनाने की पतली लकड़ी ले आते हैं। बालमपुर में बांस के कारीगरों के दो परिवार अब भी डलिया बनाते हैं पर वे बांस जंगल से नहीं ला सकते। उन्हें बांस भोपाल के बाज़ार से लाना पड़ता है।

चित्र 5 लकड़ी का ठाठ, ऊपर कंवेलू

रोपणी: बालमपुर के आसपास के खराब हुए जंगलों को फिर से लगाया जा रहा है। (चित्र 4) इसके लिए गांव में एक सरकारी रोपणी बनाई गई है। इसमें लकड़ी और फल देने वाले वृक्ष तथा बांस - सभी की पौध तैयार की जाती है।

बरसात में जब पेड़ लगाए जाते हैं तब इस गांव के 100-300 लोगों को रोपणी में काम भी मिल जाता है। दूसरे मौसम में भी 25-30 लोग रोपणी में काम पा लेते हैं। एक किसान ने कगार के नीचे अपनी ज़मीन के पथरीले हिस्से में जंगल लगाया है ताकि वह लकड़ी आदि बेच कर मुनाफा कमा सके।

जंगल और रोपणी से बालमपुर के लोगों को अब क्या मदद मिलती है?

बालमपुर के घर

बालमपुर के पुराने मकान तो लकड़ी के ही बने हैं। चित्र 5 में देखो, घर में लकड़ी कहां-कहां लगी है। लकड़ी और बांस के **छाजन** के ऊपर खपरैल पड़ी है। यहां खपरैल तो कुम्हार बनाते ही हैं, और लोग खुद भी बना लेते हैं। दीवारें पत्थर और मिट्टी से जोड़ी गई हैं। फर्श भी पत्थर के हैं क्योंकि यहां आसपास पत्थर आसानी से मिल जाता है। कई घरों में छत भी पत्थर की पट्टियों से बनी हैं।

यह तो हुई पुरानी बात, जब पास में जंगल से लकड़ी और बांस काटने पर कोई पाबंदी नहीं थी। मकान तो बालमपुर में अब भी बन रहे हैं, लेकिन किस चीज़ से? चित्र 6 में एक बनते हुए मकान को देखो। पत्थर की दीवारें हैं और उनके ऊपर रखी गईं हैं लंबी-लंबी पत्थर की मियालें।

गांव के लोग बताते हैं कि दीवारें बनाने का अलंगा (पत्थर की बड़ी ईंटें) तो पठार के कगार से काट लेते हैं। देखो यहां के लोगों के कैसे काम आया पठार का कगार! लेकिन लंबा पत्थर यहां नहीं मिलता। यह रायसेन या विदिशा की खदानों से आता है।

बालमपुर गांव में सिलावट लोगों के कई परिवार हैं जो पत्थर काटने का काम अब भी करते हैं। ये सिलावट लोग पत्थर के अलंगों के अलावा चक्की और लकड़ी के खंभे के लिए पत्थर की कुर्सी भी बनाते हैं।

बालमपुर के लिये सड़क तथा बाज़ार

बालमपुर भोपाल और विदिशा के रास्ते में पड़ता है। इनके बीच की रेल लाईन पर एक छोटा स्टेशन है – सूखी सेवनिया। वहीं उतर कर 7 किलोमीटर और चलकर बालमपुर आना होता है। रेल लाईन बिछने से पहले लोगों को शहर आने-जाने में कितनी कठिनाई होती होगी! ऐसे में अनाज बेचना और सामान लाना कितना कठिन रहा होगा।

25 साल पहले यहां से कच्ची सड़क निकाली गई। तब बैलगाड़ियां तो चलने लगीं लेकिन ट्रक और बस चलना फिर भी कम था। अब तो पक्की डामर की सड़क बन गई है। इससे किसानों को क्या सुविधा हुई? भोपाल का बाज़ार तो बहुत बड़ा है और वहां अनाज की बड़ी मंडी भी है। जिन किसानों को अनाज बेचना होता है, भोपाल की मंडी में बेच आते हैं। कभी थोड़ा अनाज बेचकर ज़रूरत का सामान खरीदना हुआ तो विदिशा की तरफ दीवानगंज के हाट में बेचने चले जाते हैं।

तुमने कोटगांव के बारे में पढ़ा था कि वहां कई सड़कें चारों तरफ जाती हैं। बालमपुर के पास में एक ही सड़क और रेल लाईन है। बालमपुर की बस्ती दो ही दिशाओं में जुड़ी है - दक्षिण में भोपाल से और उत्तर में विदिशा से। वहां खड़े होकर पूर्व और पश्चिम की ओर देखें तो ऊंचे कगार, पथरीली ढलान, झाड़ियां और छोटे पेड़ ही दिखते हैं। बस्तियां तो इन दिशाओं में भी होंगी लेकिन प्रकृति ने वहां चढ़ने-उतरने वाले रास्ते बनाना कितना कठिन कर दिया है।

चित्र 6 पत्थर की मियालें

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. इन प्रश्नों का उत्तर पाठ के किस उपशीर्षक में मिलेगा– सही जोड़ी मिलाओ–
   क) बालमपुर के घरों की छत कैसे बनती है – **तालाब और बांध**
   ख) बालमपुर के लोग खेती के अलावा क्या काम करते हैं - **पठार की बनावट**
   ग) पठार पर कंकरीली मिट्टी कहां पाई जाती है - **जंगल कटे जंगल लगे**
   घ) पठार पर जंगल कहां पाए जाते हैं - **घर**
2. चित्र 3 में तुम्हें क्या दिख रहा है - पूरे दृश्य का विस्तार से पांच-छः वाक्यों में वर्णन करो।
3. बालमपुर के किसानों को साल में दो फसलें लेने में क्या कठिनाई है? यह कठिनाई कोटगांव में क्यों नहीं है?
4. बालमपुर के किसानों को कुआं बनाना कठिन और महंगा क्यों पड़ता है? सिर्फ 6 वाक्यों में लिखो।
5. बालमपुर के कई लोग लकड़ी, ईंट और खपरैल की बजाय पत्थर से घर बनाते हैं। ऐसा क्यों?
6. बालमपुर से पूर्व व पश्चिम दिशा में जाने में क्या प्राकृतिक रुकावट है?
7. कोटगांव व बालमपुर के घरों में क्या फर्क दिखता है?
8. पाहवाड़ी और बालमपुर गांवों में इन बातों में क्या समानता दिखती है –
   1. बनावट 2. मिट्टी 3. कुएं 4. तालाब व बांध
8. पठार की कगार से बालमपुर के लोगों को मिलने वाले कोई तीन फायदे बताओ।
9. पठार पर सड़क व रेल लाईन बनाने के लिए क्या-क्या करना पड़ता होगा - चर्चा करो।